ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-11* December- 2020
Innovation The Research Concept

साहित्य सम्राट प्रो॰ हरिशंकर 'आदेश' हिन्दी के अनन्य सेवक

Sahitya Samrat Prof. Harishankar 'Aadesh': The Unique Devotee of Hindi

Paper Submission: 28/11/2020, Date of Acceptance: 24/12/2020, Date of Publication: 25/12/2020

ऋषिपाल
सह प्राध्यापक एवं अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
बाबू अनन्त राम जनता महाविद्यालय, कौल, कैथल, हरियाणा, भारत

सारांश

साहित्य सम्राट प्रो॰ हरिशंकर 'आदेश' हिन्दी के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त साहित्यकार हैं। वे प्रवासी भारतीय के रूप में निस्सन्देह ऐसे प्रथम साहित्यकार हैं, जिन्होंने साहित्य–सृजन के क्षेत्र में न केवल कीर्तिमान अर्जित किया है, बल्कि भारतीय संस्कृति, साहित्य और ललित कला की त्रिवेणी से विदेशी धरती को आप्यायित कर दिया है। बेशक विगत 40 वर्षों से अधिक वे लगातार विदेश में रह रहे हैं, लेकिन भारत, भारतीयता और भारतीय संस्कृति के प्रति उनके मन में गहरा लगाव है। उन्हें अगर भारतीय संस्कृति के 'श्लाका महापुरुष' भी कहा जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

Sahitya Samrat Prof. Harishankar 'Adesh' is an internationally renowned personality in Hindi litterateur. As a Non Resident of India, he is undoubtedly the first such writer who has not only achieved a record in the field of literature-making, but has also rejected the foreign land from the trinity of Indian culture, literature and fine arts. Of course, he has been living abroad continuously for the last 40 years, but has a deep affection for India, Indianness and Indian culture. It is no exaggeration to say that he is 'Shlaka Mahapurush' of Indian culture.

मुख्य शब्द : प्रो॰ हरिशंकर 'आदेश', साहित्यकार, भारतीय संस्कृति।
Prof. Harishankar 'Adesh', Literatureist, Indian Culture

प्रस्तावना

महाकवि प्रो॰ हरिशंकर 'आदेश' बहु आयामी काव्य प्रतिभा के धनी हैं। गद्य और पद्य दोनों क्षेत्रों में उनकी लेखनी ने अपनी पहचान बनायी है। 'आदेश' जी कवि, लेखक, निबन्धकार, कहानीकार, संस्मरण लेखक, डायरी लेखक, प्रबन्धकार, पत्रकार, सम्पादक, अनुवादक, समीक्षक, गीतकार, मुक्तक रचनाकार आदि के रूप में विश्व साहित्याकाश में एक दीप्तिमान नक्षत्र के रूप में अपना आलोक विकीर्ण कर रहे हैं। उनके व्यक्तित्व में कवि, लेखक, शिक्षक और संगीतज्ञ के सभी गुण समाहित हैं। वे हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी आदि भाषाओं के भी ज्ञाता हैं। साहित्य सम्राट प्रो॰ हरिशंकर 'आदेश' साहित्य सृजक के साथ–साथ एक महान संगीतकार भी हैं। गायन और वादन दोनों की विद्याओं में वे निपुण हैं। भारतीय संस्कृति, अध्यात्म और साहित्य के प्रचार–प्रसार में विदेशों में उनकी उल्लेखनीय भूमिका है। इसलिए उन्हें 'महापुरुष', 'महामानव', 'साहित्य सम्राट' आदि की संज्ञा से विभूषित करना अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं होगा।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य साहित्य सम्राट प्रो॰ हरिशंकर 'आदेश' के हिन्दी साहित्य में किये गये महत्वपूर्ण योगदान का अध्ययन करना है।

विषय विस्तार

प्रवासी साहित्यकार प्रो॰ हरिशंकर 'आदेश' भारत के मूल निवासी हैं इसलिए उनके व्यक्तित्व में भारतीय सभ्यता की झलक स्पष्ट रूप से प्रतिबिम्बित होती है। विदेशी धरती पर रहने के बाद भी वहां की संस्कृति का प्रभाव उन पर नहीं पड़ा। 'आदेश' जी के व्यक्तित्व निर्माण में उनके माता–पिता के संस्कारों, जीवन मूल्यों एवं आदर्शों की अहम् भूमिका रही है। वे स्वभाव से परोपकारी एवं कल्याणकारी प्रवृति के हैं। स्वयं दुख सहकर दूसरों का उपकार करना उनकी आदत है। उनकी इसी उदारता को देखकर डॉ॰ कामता कमलेश ने लिखा है –

''अपने को कष्ट देकर सबको सुख पहुँचाना कवि 'आदेश' की आदत नहीं अपितु जन्मना–नामना गुण हैं।''[1] 'आदेश जी की निम्नोक्त पंक्तियां भी उनके विचार, गुण, मानव–प्रेम, उदारता आदि पर प्रकाश डालती हैं –

''दुनिया में लेकर आया हूँ पैगामे मोहब्बत,
हर दिल को प्यार करना सिखा के ही जाऊँगा।''[2]

साहित्य सम्राट 'आदेश' जी ने विदेशी धरती पर रह कर भी हिन्दी का सम्मान किया है। वे हमेशा ही हिन्दी प्रचार–प्रसार में लीन रहते हैं। उन्होंने गद्य व पद्य दोनों विद्याओं में लेखनी चलाकर हिन्दी का सम्मान बढ़ाया है। हिन्दी सेवक के रूप में महाकवि 'आदेश' जी ने चार महाकाव्यों 'अनुराग', 'शकुंतला', 'महारानी दमयन्ती' और 'निर्वाण' का सृजन किया है। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व सागर के समान विस्तृत है जिसे रेखांकित एवं पृष्ठांकित करना सूर्य को दीपक दिखाने जैसा होगा। उनके हिन्दी सृजन के प्रति प्रेम व निष्ठा को देखकर डॉ॰ देवेन्द्र मिश्र अपने शब्दों में कहते हैं

''हिन्दी काव्य गगन में चमके हो जैसे ध्रुवतारा।
हरिशंकर 'आदेश' महाकवि, तुम हो गर्व हमारा।।
तुमने विदेशों में निज संस्कृति दीप प्रदीप्त किया है।
हिन्दी और संगीत शिक्षण का अनुपम कार्य किया है।।
दूत सांस्कृतिक भारत के, है कार्य तुम्हारा न्यारा।
हरिशंकर 'आदेश' महाकवि, तुम हो गर्व हमारा।।
'शकुन्तला', 'अनुराग', 'रचियता', भाषा शैली मन भाई।
'दमयन्ती', 'निर्वाण' की सुन्दर, क्यूं न करूँ बड़ाई।।
प्रेम, विरह फिर मिलन अंत में, ज्यों संगम की धारा।
हरिशंकर 'आदेश' महाकवि, तुम हो गर्व हमारा।।''[3]

साहित्य सम्राट 'आदेश' जी वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना के प्रबल प्रचारक, प्रसारक, संवर्द्धक एवं उन्नायक हैं। वे 'समग्र विश्व परिवार' के सार्थक और 'विश्व मानवता' के प्रेरक एवं पोषक हैं। उन्हें स्वयं व अपने देश के साथ–साथ सम्पूर्ण मानवता के प्रति भी प्रेम है। वे सबका भला चाहते हैं। उन्होंने भारतीय संस्कृति को विदेशी धरती पर फैलाने व जड़ें मजबूत करने में महती भूमिका निभाई है। अपनी निष्ठा, परिश्रम व अध्यवसाय से अमेरिका, कनाडा और ट्रिनिडाड आदि में उन्होंने हिन्दी व संस्कृत का प्रचार–प्रसार किया। 'आदेश' जी कनाडा में एक कवि गोष्ठी में हिन्दी का संदेश देते हुए कहते हैं कि –

भाषा ही हर पीढ़ी की नायक होती है।
भाषा ही हर संस्कृति की वाहक होती है।।
हिन्दी किसी विशेष वर्ग की नहीं धरोहर।
हिन्दी भाषा धर्म–जाति से सदैव ऊपर।।
हम हिन्दी भाषी हैं, हिन्दी की संतति हैं।
हम हिन्दी की, हिन्दी हम सबकी सम्पत्ति है।।
विदेश में हिन्दी हम सबकी त्राता है।
हिन्दी सत्य अर्थ में हम सबकी माता है।।
हिन्दी का विकास, हम सबका ही विकास है।
हिन्दी देती है, देगी, नित नव प्रकाश है।।
भरकर जीवन में नैतिक बल, विकास, आशा।
देती है आनन्द सदा अपनी ही भाषा।।
अपने–अपने हृदय–चक्षुओं को अब खोलें।
आओ, हम सब मिलकर हिन्दी की जय बोलें।।[4]

प्रवासी साहित्यकार 'आदेश' जी का समस्त जीवन केवल प्रचार–प्रसार तथा साहित्यिक गतिविधियों तक सीमित नहीं रहा अपितु सामाजिक, धार्मिक और संगीत के क्षेत्र मे भी उनका योगदान अपरिमित है। उनका व्यक्तित्व आध्यात्मिक प्रवृति का है। 'आदेश' जी माँ सरस्वती के उपासक हैं। वे उनकी अर्चना करके ही अपनी काव्य–कृतियों का शुभारम्भ करते हैं व सारे संसार के कल्याण की मंगल कामना भी करते हैं। माँ सरस्वती के समक्ष मानव–मंगल की कामना करते हुए वे कहते हैं कि –

''हर प्राणी में आत्मभाव हो, आत्मीयतामय स्वभाव हो।
नैतिकता की हिलें न नींवें, पुनः प्रबल दैवी प्रभाव हो।
रोगों का निदान हो समूल, प्राणों को मृत्यंजय कर दे।''[5]

महाकवि 'आदेश' जी को विदेशी धरती पर जहां एक उच्च कोटि का साहित्यकार, संगीतकार, संत और गुरु के रूप में सम्मान मिला है, वहीं वे सफल शिक्षक और सही अर्थों में एक सच्चे मानव भी हैं। लगभग चार दशक से भी अधिक 'आदेश' जी विदेशी धरा पर रहकर अपने सगे–सम्बन्धियों को निरन्तर याद करते हैं, क्योंकि वे संवेदनशील व्यक्ति हैं। समस्त परिवार के प्रति उनके मन में प्रेम, निष्ठा व गहरा लगाव है। विदेशी संस्कृति के प्रभाव में उनके भाव, विचार, आदर्श, सोच तनिक भी विचलित नहीं हुए। कई सौ मील दूर रहकर भी उन्हें अपने घर के सदस्यों के प्रति सदैव प्रेम रहता है। वे उन्हें कभी भी भूलते नहीं। नववर्ष के शुभावसर पर अपनी माता–पिता, बहन और पत्नी को याद करते हुए वे लिखते हैं कि –

''जिसे जन्म देने को अपना, जीवन तक खतरे में डाला।
रख दश मास कोख में जिसको, रक्त पिलाकर अपना पाला,
सुत की प्रतीक्षा मे जिसने, ठहर–ठहर हर सांस गंवाई,
नये वर्ष की उसे बधाई।।''
''एक जून की रोटी खाता, पर्वों पर जोगी बन जाता।
पल–पल देवों की मिन्नत कर, सुत की सदैव कुशल मनाता।।
झूठी आशाओं के बल पर, जिसने अब तक आयु बिताई।
नये वर्ष की उसे बधाई।।''
''आशा लगी भाभी भइया से, अब इस वर्ष अवश्य आयेंगे।
दिशाहीन मेरी नौका को, निश्चित तट पर पहुँचायेंगे।।
जिसकी आंखों में सावन है, उर होली की ज्वाल समाई।
नये वर्ष की उसे बधाई।।''
''तुलसी की पूजा करती है, गौरी से विनती करती है।
मेरे पति के दुःख मुझको दे, पति–सुख की इच्छा करती है।।
भोली–भाली प्रिय के पथ में, अब तक पलकें आह! बिछाई।
नये वर्ष की उसे बधाई।।''[6]

महाकवि प्रो॰ हरिशंकर 'आदेश' जी ने हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए हिन्दी की शब्दावली को सामान्य बना रहने पर जोर दिया। उन्हें डर था कि कहीं हिन्दी शब्दावली सीमित और संकुचित होकर अपनी अस्मिता और अस्तित्व न खो दें। 'आदेश' जी कहते हैं कि ''संस्कृत–तनया हिन्दी का शब्द कोश संसार की समस्त

भाषाओं की अपेक्षा कई गुणा अधिक समृद्ध और सार्थक है। इस विशाल शब्द–निधि को सुरक्षित रखने के लिए साहित्यकारों तथा प्रयोक्ताओं को अधिकाधिक हिन्दी शब्दों का प्रयोग करते रहना परम आवश्यक है।''[7] साथ ही उन्होंने जोर देकर यह भी कहा है कि ''अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों को हृदयंगम करना कोई दोष नहीं होता, दोष होता है अपने पास सब कुछ होते हुए भी भिक्षा मांगना या अपनी चिर संचित पूंजी की अवहेलना करके उसे खो देना। अपने पास उपयुक्त वस्त्राभूषण होते हुए भी उधार मांगकर अन्यों के वस्त्राभूषण पहनने वाले को जनमसमुदाय प्रशंसा की दृष्टि से नहीं देखता।''[8] आदेश जी के हिन्दी पत्र को पढ़कर उनके हिन्दी के प्रति प्रेम, निष्ठा व हिन्दी सेवा का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। पूर्णिमा वर्मन 'आदेश' जी के पत्र को पढ़कर उनके हिन्दी प्रेम के बारे में बताती है कि–

''सपरिवार हिन्दी सेवा रत रहूं मैं मगन,
हिन्दी के प्रति पूर्ण समर्पित मेरा जीवन।
यायावर कवि हूँ हिन्दी का अकिंचन।।
नवल वर्ष शुभ होवे, तुम्हें पूर्णिमा वर्मन।।
भारतीय संस्कृति का सेवक, अनुयायी हूँ,
हिन्दी–रचना–धर्मी हूँ, अध्यवसायी हूँ,
करता मनोयोग से नित्य धर्म–परिपालन।।
नवल वर्ष शुभ होवे, तुम्हें पूर्णिमा वर्मन।
जग भर से आमंत्रित कर हिन्दी रचनायें।
बना रही हो जग में नूतन परम्परायें,
सबकी रचनाओं का करती विहंस प्रकाशन।
नवल वर्ष शुभ होवे, तुम्हें पूर्णिमा वर्मन।।[9]

हिन्दी भाषा के प्रति वे जिस प्रकार से कटिबद्ध होकर निरन्तर समर्पित हैं, वह हिन्दी भाषा प्रेमियों के लिए अत्यन्त गर्व की बात है। इस प्रकार की विनम्रतापूर्ण प्रतिबद्धता हम भारतीयों के लिए अत्यन्त आवश्यक है। 'आदेश' जी के अथक परिश्रम एवं दृढ़ निष्ठा का ही परिणाम है कि आज कैनेडा, अमेरिका, ट्रिनिडाड तथा अन्य देशों में हिन्दी फल–फूल रही है। उनकी प्रेरणा से ही आज कितने प्रवासी कवि तथा लेखक सुन्दर रचनायें एवं लेख प्रस्तुत कर रहे हैं। 'आदेश' जी स्वयं में हिन्दी हैं, कविता हैं, उन्हीं के शब्दों में –

''कविता ही मेरा जीवन, मेरा जीवन ही कविता,
मैं परिभाषा कविता की, कविता मेरी परिभाषा।।''[10]

महाकवि 'आदेश' को एक व्यक्ति, एक कवि, एक लेखक के रूप में जानने–समझने के लिए उनका अब तक का लिखा गया साहित्य ही उनके लिए दर्पण है। पुष्पा देवी लिखती हैं कि ''आदेश जी तो अपनी रचनाओं की भूमिकाओं में इतने स्पष्ट हैं कि उन्हें कहीं अन्यत्र ढूंढने की आवश्यकता ही नहीं है। उनके जीवन की सहजता, तत्परता और मानव–मूल्यों के प्रति विकसित अवस्था उनके साहित्य में पल्लवित हुई है।''[11] उनकी हिन्दू धर्म, संस्कृति और अध्यात्म के साथ साहित्य, संगीत, शिक्षा तथा अन्य ज्ञान–विज्ञान के विषयों में विशेष रुचि रही है। डॉ॰ कमल किशोर गोयनका 'निर्वाण' की भूमिका में लिखते हैं कि ''वे ट्रिनिडाड एवं टोबैगो, कनाडा तथा अमेरिका में आदेश आश्रमों की स्थापना करके हिन्दू धर्म, संस्कृति, संगीत आदि के प्रचार तथा विकास के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं, जो एक बार तो स्वामी विवेकानन्द की याद दिला देते हैं।''[12] आदेश जी को हिन्दी से जोड़कर पाराशर गौड़ (गढ़वाली में) भी लिखते हैं कि –

''माहमान्य प्रो॰ श्रीमन् हरिशंकर आदेश, तुमछां हिन्दी का महा प्राण,
तुमसे हिन्दी हिन्दी आपै पछयाण, हिन्दी के वरदपुत्र तुमथै मेरू प्रणाम।।[13]

साहित्य सम्राट 'आदेश' जी उन हिन्दी कवियों में से हैं जिन्होंने कविता को जीवन में जिया है या यह कहना संगत है कि कविता को उन्होंने अपनी कोख से जन्म दिया है। उनकी भाषा जन–जीवन की राग–विलास की भाषा है। अपनी कविताओं में तथ्यों की असाधारणता पर ध्यान न देकर, वे उन साधारण को इस तरह असाधारण बनाकर प्रस्तुत करते हैं कि जिन्हें पाठक पढ़ व सुन कर मंत्र मुग्ध हुए बिना नहीं रहते। हिन्दी के महान साहित्यकार 'आदेश' जी का जीवन हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार व उसकी परिपक्वता, सुदृढ़ता के लिए समर्पित है। कनाडा में विजय विक्रान्त भी लिखते हैं कि –

''हिन्दी साहित्य की सेवा को ले, जो कुछ भी लिखा अब तक मैंने।
यह कृपा है उस प्रोत्साहन की, जो आदेश जी से पाया सदा मैंने।
विदेश में हिन्दी भाषा को, मिला जो सम्मान।
आदेश जी आपकी लेखनी का, है यह सब परिणाम।।''[14]

महाकवि 'आदेश' जी भारतीय संगीत शास्त्र के आचार्य हैं। उनके मन में भारत की राष्ट्र भाषा, राजभाषा और जनभाषा हिन्दी के प्रति अगाध–प्रेम है। उन्होंने हिन्दी सेवा के लिए अपने जीवन को समर्पित किया है। उनके तन–मन में हिन्दी बसी है। हिन्दी की चर्चा करते हुए वे कहते हैं कि –

''नैतिकता का कोश है, हिन्दी सद् साहित्य।
मानव जीवन के लिए, मानो हो आदित्य।।
हिन्दी शब्दों के न संग, अंग्रेजी में शब्द।
हिन्दी शब्दों के लिए, शब्द नहीं उपलब्ध।।
आओ हम सब हिन्दी बोलें।
अपनाएं हम कोई भी मत।
अपने मन की गांठें खोलें।
आओ हम सब हिन्दी सीखें।।''[15]

महाकवि 'आदेश' जी ने आजीवन हिन्दी की सेवा अपनी मातृभूमि की सेवा के रूप में की है। विदेशी संस्कृति व भाषा का उन पर तनिक भी असर नहीं है। हिन्दी की दुर्दशा देखकर उनका मन हमेशा खिन्न रहता है। हिन्दी के लिए उनके मन में अथाह पीड़ा है। वे कहते हैं कि जिसे राष्ट्रभाषा बनना था वह आज तक राजभाषा ही क्यों बनी? भारत में ही हिन्दी की उपेक्षा की जा रही है। आजादी के लगभग सात दशक बाद भी अपने ही घर में हिन्दी की उपेक्षा क्यों हो रही है? उनकी हिन्दी पीड़ा देखें –

''भारत में भारत के बाहर, करें सदा हिन्दी का आदर।
परपत्र कितने ही बदलें, किन्तु न अपनी भाषा भूलें।
अस्सी करोड़ से अधिक, हिन्दी भाषी आज,

फिर भी हिन्दी का नहीं भारत में राज।
दुःख होता देखकर लज्जा की है बात।
हिन्दी हिन्दुस्तान में झेले झंझावात।।''[16]

हिन्दी की दुर्दशा के कारण महाकवि 'आदेश' के मन में भारी पीड़ा होती है। हिंदी की दशा को देखकर उन्हें भारतीयों के प्रति क्रोध भी आता है। उनकी आंखों में आंसू आ जाते हैं। लोगों की अंग्रेजी के प्रति मानसिकता को देखकर वे विचलित हो जाते हैं। भारत के महाकवि 'आदेश' जन–मन को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि –

''प्रिय हिन्दी के नाम पर बांध न इतना तूल।
हिन्दी हिन्दुस्तान की भाषा है, मत भूल।।
सकल राष्ट्र की आशा हिन्दी, संविधान की भाषा हिन्दी।
अस्सी प्रतिशत अंग्रेजी संग, बनती आज तमाशा हिन्दी।।
प्रजातंत्र ने कर दिया, हिन्दी का विध्वंस।
हिन्दी भाषा ही करे, अब हिन्दी का दंश।।''[17]

आधुनिक शिक्षा पद्धति को देखकर 'आदेश' जी का मन खिन्न रहता है। उन्होंने आज की शिक्षा प्रणाली (कान्वेंट शिक्षा) और सरकारी नीति की आलोचना की है। उनका दृष्टिकोण है कि भारतीय संस्कृति के लिए वर्तमान शिक्षा बहुत बड़ा खतरा है। वे लिखते हैं कि –

''कान्वेंट शिक्षा करे, भारतीयता का नाश।
मधुर गरल सी कर रही, संस्कृति सत्यानाश।।
कान्वेंट शिक्षा करे, हिन्दी का उपहास।
इंग्लिश प्रोत्साहित करे, कर हिन्दी का ह्रास।।''[18]

कविगण तथा साहित्यकार अन्य भाषाओं के शब्द प्रयोग करते हैं जबकि वास्तविकता यह है कि हृदय की व्यथा बिना मातृभाषा के व्यक्त नहीं होती। विश्व पटल पर हिन्दुस्तान की पहचान कराने में सूक्ष्म भाषा हिन्दी ही है – यह मानना है डॉ॰ महेश दिवाकर जी का। उनके शब्दों में 'भारत मेरे देश की हिन्दी है पहचान।''[19] प्रवासी साहित्यकार 'आदेश' जी का मानना है कि मातृभाषा से बढ़कर कोई प्रेम नहीं है। उन्होंने भारत के लोगों में एकता के लिए भी हिन्दी–भाषा को आवश्यक माना है। साथ ही भाषा में बोधगम्यता लाने के लिए जनभाषा पर बल देते हुए कहते हैं –

''जनभाषा हो बोध गम्य, शिक्षित भाषा विशिष्ठ,
पर–भाषा, पर संस्कृति में फंस, करो न इसका
तिरस्कार।।''[20]
सूत्र संगठन का है हिन्दी, राष्ट्र एकता की है महिमा।
राष्ट्र बड़ा है व्यक्ति धर्म से, पूजो सदा राष्ट्र की
भाषा।।''[21]

निष्कर्ष

सारांशतः हम कह सकते हैं कि महाकवि 'आदेश' प्रवासी भारतीयों में सिरमौर है, जिन्होंने हिन्दी की लगभग सभी विधाओं में तन्मयता से लेखनी चलाई। महाकवि 'आदेश' जी के हिन्दी प्रेम व हिन्दी सेवा के बारे में लिखना सम्भव नहीं है। उनके व्यक्तित्व व कृतित्व को वर्णित करना सूरज को दीपक दिखाने के समान है। 'आदेश' जी ने अनेक दोहा सप्तशतियों की रचना करके हिन्दी की सेवा की है। वैसे तो प्राचीनकाल से ही भारत में सतसई परम्परा का प्रचलन रहा है। संस्कृत व अपभ्रंश से होती हुई यह सतसई परम्परा हिन्दी तक पहुंच गई है। महाकवि 'आदेश' जी ने अनेक दोहा सप्तशतियों की रचना की है''[22] जिनमें 'निर्मल सप्तशती', 'आदेश सप्तशती', 'जमुना सप्तशती', 'विवेक सप्तशती', 'पत्नी सप्तशती', 'प्रवासी सप्तशती' और 'सुरभि सप्तशती' आदि प्रमुख हैं। इन सभी में हिन्दी प्रेम, ईश्वर की भक्ति, देश–भक्ति, लोकतन्त्र प्रेम, सत्य, अहिंसा, दया, मानवता, राजनीति, दहेज, युद्ध, आतंकवाद, वसुधैव कुटुम्बकम, यौवन, स्वास्थ्य, दुःख–सुख, निर्धनता, धन–वैभव, रिश्ते–नाते, बालक–युवा, वृद्ध, नारी, आशा–निराशा, शिक्षा, भारतीय सांस्कृतिक–वैभव, पाश्चात्य– जीवन–जगत से जुड़े भाव आदि हैं, जिसकी अभिव्यक्ति कवि ने सहज, संरल ढंग से की है।

इसलिए हम गर्व से कह सकते हैं कि महाकवि हरिशंकर 'आदेश' आधुनिक हिन्दी राष्ट्र काव्यधारा के चर्चित और महान प्रवासी कवि हैं। उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने काव्य की भाषा को इतना सरल कर दिया है कि वह लोक मानस में सहज ही अपनी समूची लयात्मकता के साथ प्रवेश करती है। निश्चित रूप से 'आदेश' जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी, सुविज्ञ, अध्ययनशील लेखक, कवि, महान साहित्यकार हैं। हिन्दी के प्रति प्रेम उनमें आत्मविश्वास जगाता है और जिम्मेदारियों का एहसास भरता है। उनका हृदय पारदर्शी है, स्वच्छ है। वे महान योगी, असाधारण दार्शनिक, गम्भीर चिन्तक, साहित्यिक– संस्कृति एवं समग्र मानवता को सहज समर्पित एक सीधे–सच्चे संत भी हैं। 'आदेश' जी ने भारत का सांस्कृतिक संदेश पूरे विश्व में पहुंचाया है। कला की दृष्टि से भी देखें तो उनकी समस्त कृतियों में साहित्यिक हिन्दी का प्रयोग हुआ है जो आम बोलचाल की भाषा को आत्मसात किए है। भाषागत सहजता, सरलता, प्रांजलता, स्वाभाविकता, मित्रात्मकता, प्रभावोत्पादकता आदि का गुण प्रत्येक रचना में दिखाई पड़ता है। 'आदेश' जी ने साहित्य की कोई ऐसी विधा नहीं छोड़ी जिस पर उन्होंने अपनी लेखनी न चलाई हो। काव्य उनकी प्रिय विधा है। उनकी वैचारिक स्पष्टता और सूक्ष्म दृष्टि का परिणाम है कि वे साहित्य और ललित कलाओं का समन्वय अपने कार्यक्षेत्र में कर सके और अपनी ऊर्जा और स्फूर्ति से अपने लक्ष्य और ध्येय को प्राप्त कर सके। मैं ऐसे महान कर्मयोद्धा के प्रति नतमस्तक हूँ। भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि वे स्वस्थ रहें ताकि अपनी सशक्त लेखनी से हम सबका मार्ग प्रशस्त कर सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *डॉ॰ कामता कमलेश, शदर–शतम् भूमिका लहू और सिन्दूर, पृ॰ 114*
2. *हरिशंकर आदेश, स्वतन्त्रता दिवस कविता, पृ॰ 116*
3. *प्रवासी महाकवि प्रो॰ हरिशंकर 'आदेश' अमृत महोत्सव ग्रन्थ, सम्पादक डॉ॰ महेश 'दिवाकर', पृ॰ 33*
4. *शताब्दी के स्वर, प्रो॰ हरिशंकर आदेश, हिन्दी की जय बोलें, पृ॰ 68*
5. *शताब्दी के स्वर, प्रो॰ हरिशंकर आदेश, हिन्दी की जय बोलें, पृ॰ 03*
6. *शताब्दी के स्वर, प्रो॰ हरिशंकर आदेश, हिन्दी की जय बोलें, पृ॰ 06, 08, 09, 11*
7. *शताब्दी के स्वर, प्रो॰ हरिशंकर आदेश, हिन्दी की जय बोलें, पृ॰ 09*

8. शताब्दी के स्वर, प्रो॰ हरिशंकर आदेश, हिन्दी की जय बोलें, पृ॰ 09,10
9. प्रवासी महाकवि प्रो॰ हरिशंकर 'आदेश' अमृत महोत्सव ग्रन्थ, सम्पादक डॉ॰ महेश 'दिवाकर', पृ॰ 66
10. प्रवासी महाकवि प्रो॰ हरिशंकर 'आदेश' अमृत महोत्सव ग्रन्थ, सम्पादक डॉ॰ महेश 'दिवाकर', पृ॰ 69
11. पुष्पा देवी, प्रो॰ हरिशंकर 'आदेश' के काव्य में प्रेम और सौन्दर्य–चित्रण, पृ॰ 23
12. हरिशंकर 'आदेश' निर्वाण, पृ॰ भूमिका से
13. प्रवासी महाकवि प्रो॰ हरिशंकर 'आदेश' अमृत महोत्सव ग्रन्थ, सम्पादक डॉ॰ महेश 'दिवाकर', पृ॰ 106
14. प्रवासी महाकवि प्रो॰ हरिशंकर 'आदेश' अमृत महोत्सव ग्रन्थ, सम्पादक डॉ॰ महेश 'दिवाकर', पृ॰ 119–120
15. प्रवासी महाकवि प्रो॰ हरिशंकर 'आदेश' अमृत महोत्सव ग्रन्थ, सम्पादक डॉ॰ महेश 'दिवाकर', पृ॰ 149
16. प्रवासी महाकवि प्रो॰ हरिशंकर 'आदेश' अमृत महोत्सव ग्रन्थ, सम्पादक डॉ॰ महेश 'दिवाकर', पृ॰ 149–150
17. प्रवासी महाकवि प्रो॰ हरिशंकर 'आदेश' अमृत महोत्सव ग्रन्थ, सम्पादक डॉ॰ महेश 'दिवाकर', पृ॰ 150–151
18. 'सुरभि सप्तशती' : यथानाम तथा गुण, डॉ॰ महेश दिवाकर, पृ॰ 51
19. युवक सोचो, डॉ॰ महेश दिवाकर, पृ॰ 35
20. विवेक सप्तशती, दोहा नं. 440
21. आहत आकांक्षायें, दोहा नं. 31
22. 'सुरभि सप्तशती' : यथानाम तथा गुण, डॉ॰ महेश 'दिवाकर', पृ॰ 06